स्त्री कथाः कथा अनंता समग्र अध्ययन

सीमा पन्नु
शोधार्थी

डॉ सत्यनारायन

'स्त्री विमर्ष, आज साहित्य का महत्वपूर्ण विमर्ष है। इसका कारण यह भी है कि देष की महिलाएं सच्ची एवं असली आजादी की इच्छा करने लग गई हैं। प्रष्न बनता है कि क्या पुरानी परम्पराओं में स्त्री मुक्ति की इच्छ नहीं करती थी? या वे बंदी ही नहीं थी। कहना संगत होगा कि आजादी के बहुत बाद भी भारत का स्वैच्छिक क्षेत्र एक बड़े प्रगतिषील सामाजिक व स्वच्छ परिवर्तन की राह देख रहा है। इसी संदर्भ में स्त्री विमर्ष का जन्म हुआ है। डॉ रंजन जैदी की कोशिष इसी विमर्ष को लेकर पाठक पक्ष के सामने स्त्री विमर्ष के नए आयाम स्थापित करना है। आप हिन्दी साहित्य को सपरिचित हस्ताक्षक हैं, कथा, उपन्यास, कविता आदि अनेक विधाओं पर लिखने वाले आपने स्त्री विमर्ष विमर्श विषय पर मार्मिक एवं तार्किक लेखन किया है। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की पत्रिका 'समाज कल्याण' का कई वर्षों तक संपादन एवं प्रतिष्ठित फिल्म 'अनन्या' का निर्माण एक महती उपलब्धि है। पत्रिका संपादन एवं रेडियो नाटक, रेडियो डॉक्यूमेंटरी विशेष प्रतिष्ठा के साथ साथ साहित्य सृजन भी पर्त दर पर्त, रूबरू, गिद्ध उड़ गया, बेगम साहित्य, हिंसा अहिंसा, नूर, हिन्दी साहित्य में मुस्लिम साहित्यकारों का योगदान आदि इनकी महत्वपूर्ण रचनाएं हैं। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत (बसंत कुंज नई दिल्ली) से प्रकाशित 123 पृष्ठीय 'स्त्री कथाः एक अनंता' आपकी महत्वपूर्ण स्त्री विमर्श की पुस्तक है। यहा¡ अपनी बात में बताती हैं, '' स्त्री कथा का कोई अंत नहीं है, इसका अनुभव मुझे इस विषय पर काम करने के दौरान हुआ।''

स्त्री विमर्श के तमाम वैचारिक हलचलों और हो–हल्ला के बावजूद आज भी आधी आबादी का सच बेहद भयावह और डरावना बना हुआ है। पूरे आसमान और गोलार्द्ध पर कब्जा जमाए पुरूष सत्ता से स्त्री अपने हिस्से की मांग कर रही है। उसकी यह जद्धोजहद आज भी जारी है। आस्थाओं के बाजारीकरण के साथ ही स्त्री विमर्श का विस्तार भी हुआ। बाजार, मीडिया और पुरूष सत्ता की तिहरी मार के बीच स्त्री महज उपयोग की वस्तु मान लेने पर समाज का संतुलन बिगड़ गया। फलतः स्त्री का अन्याय रंजित हो गया। पूरी पृथ्वी के धूरी की भूमिका निभाने वाली स्त्री अधूरी हो गयी। परिणाम उसने अपनी भूमिका को लेकर सोचना विवश कर दिया। इतना त्याग, समर्पण, परिश्रम से उसको क्या मिला? शोषण का दायरा। यहां वह कंद हो गयी और मुक्ति की सोचने लगी। मन बना लिया। वह मुक्त होना चाहती है। उड़ना चाहती है। अपनी चाहत पर फैलना चाहती है। बिस्तर से लेकर रसोई तक और रसोई से सड़क तक दौड़ती स्त्री मुक्ति चाहती है, उड़ान चाहती है और संघर्ष जारी है।

इस पुस्तक में लेखिका ने स्त्री विमर्श के नए और व्यापक आयाम की तलाश की गई। स्त्री विमर्श पर समस्याएँ एवं समाधान दोनों साथ साथ है। देश ही नहीं दुनियाभर की स्त्री वृहत्तर दुःखों पर दृष्टि डाली गई है। कुल मिलाकर इस पुस्तक में अपनी बात के अतिरिक्त ग्यारह अध्याय हैं।

प्रथम अध्याय 'हमें भी दे दो आधा आसमान' में लेखिका बताती है कि आदमी हमेशा औरत को उपयोग वस्तु समझता रहा है। युगों–युगों से औरत पुरूष की प्रताड़ना का शिकार रही है। चाहे स्त्री राजघराने में रही, झोपड़ी में रही दशा परिवर्तन नहीं हुआ। सभ्यता की शुरूआत से लेकर सभ्यता के विकास तक वह हमेशा पुरूष का शिकार होती रही।''[1] पुरूष सत्तात्मक व्यवस्था के प्रारंभिक काल में जन्मा विरोध रफ्ता– रफ्ता समाप्त होने लगा। वह अपने परिवार और पति के संरक्षण में खुद को

सुरक्षित और सम्मानित महसूस करने लगी। उसने अपने चरित्र और व्यवहार से जिन रिश्तों का जन्म दिया, उनकी सीमाएँ भी तय की। रिश्तों की फैलती बेलों ने परिवार को एक कुटुम्ब और समाज का रूप दे दिया। यहाँ विभिन्न प्रकार के सौपान तय किए गए। ''परम्परा चलती रही परंतु भूमिका बदल गई और औरत को लेकर गोद खिलाई प्रथा, पेट खिलाई प्रथा, पीर सांई की उटनी प्रथा, वली प्रथा जैसी कुप्रथाओं का उदय हुआ। इसके अतिरिक्त कितनी ही प्रथाएं विभिन्न रूपों में शोषण वाली थी। जाहिर था कि अन्याय कितने दिल चले।

'आस्थाओं का बाजारीकरण एवं स्त्री विमर्श का विस्तार' में लेखिका ने अध्याय की शुरूआत गांव की संस्कृति से की है। इस अध्याय में लेखिका ने गांव की विभिन्न घटनाओं को लेकर अध्याय की पृष्ठभूमि तैयार की है। ''इन घटनाओं के पीछे का एक मनोविज्ञान यह है कि अविकसित दिमागों पर अनियंत्रित दृश्य के माध्यम से प्रभाववश लोग अपना नियंत्रण खो बैठते हैं। सोप ओपेरा ने घरों में घुसकर महिलाओं को इतना महत्वाकांक्षी बना दिया कि महिला बाजार की ओर दौड़ने लगी। घरेलू संतुलन गड़बड़ा दिया, रिश्तों के नए कायाकल्प गढ़ दिए। मानवीय संवेदनाएँ चूकने लगी।''[2] फलतः बाजारीकरण फूलता चला गया और स्त्री विमर्श भी।

'अजन्मी कन्याओं का मुर्दाघर' में लेखिका ने भ्रूण हत्या पर चर्चा की है। आंकड़े बताते हैं कि लगभग 15 लाख शिशु कन्याओं की हत्या प्रतिवर्ष कर दी जाती है। यह चिन्ता का विषय है। कारण,'' गांव के बुजुर्ग बताते हैं कि समस्या मात्र दहेज नहीं है। समस्या यह है कि जिस घर में एक से अधिक कन्या होती हैं वहां दहेज की संभावनाओं को कम मानकर रिश्ते होने की संभावनाएं कम हो जाती हैं।''[3]

पुरानी नींव पर नई इमारत का संकल्प' प्रस्तुत अध्याय में बताया गया है कि
अधिकार होने पर भी भारत की महिलाओं को अधिकार उपयोग नही करने दिया जाता। "यह समाज है मेरा भी"[4] मे बताया गया है कि विकास के लिए दो बातों का होना जरूरी है स्वास्थ्य व शिक्षा। परंतु प्रश्नवाचक चिह्न बनता है दोनों बातों पर।

'किराऐ की कोख' सरोगेट मदर की व्याख्या करने वाला अध्याय है। मतलब साफ है पैसे लेकर बच्चे पैदा करना है। ''पड़ताल से पता चला है कि भारत में 5 लाख से 25 लाख रूपये तक में मनचाहा शिशु उपलब्ध हो जाता है, हालांकि बिचोलिए के द्वारा भारतीय सरोगेट मदर को इतनी रकम नहीं मिल पाती क्योंकि जिस कोख से सौदा किया जाता है उसके पास कोई कानूनी अधिकार नहीं होता। तयशुदा धन देकर उसको गुमनामी की गलियों में धकेल दिया जाता है।''[5]

'तरक्की के लिए जरूरी है कि ..... में बताया गया है कि औरत/समाज को शिक्षित एवं जागरूक किया जाए। यह शिक्षा या तालिम समाज में औरत को विशेष स्थान दिला सकती है। जब तक उसको शिक्षा नहीं मिलेगी उसका सामाजिक आर्थिक विकास संभव नही हो सकेगा। 'एशियाई दुल्हनें विदेशों में' इस बात की व्याख्या करने वाला अध्याय है। चकाचौंध अथवा मजबूरी युवतियों को विदेशी दुल्हन बनने का कारण बनती हैं और फिर धोखा धड़ी का शिकार हो जाती हैं। '' अक्सर देखा गया है कि ऐशियाई पत्नियों को मुंह न खोलने के लिए ब्लैकमेल किया जाता है। ऐसी पत्नियां घरों में होम मेड का काम करती हैं यदि पति पर पुरूष को उपकृत करना चाहता है तो पत्नी को इसके लिए मजबूर होना पड़ता है। वे नही चाहती कि तलाक दिया जाए और तलाक के बाद फिर अपने देश में तलाकशुदा का कलंक लेकर घूमे।''[6]

'फतवों की रियासत ' मुस्लिम समाज में महिला की दयनीय स्थिति का जिक्र है। '' कुरान में औरतों के अधिकरों और उनकी सुरक्षा का ख्याल रखा ताकि उनके साथ नाइंसाफी ना हो सके। इसके बाद औरतें घरेलू हिंसा का शिकार होती रही।''[7]

'महिला व बाल हिंसा पर देश दुनिया चिंतित में विभिन्न आंकड़ों द्वारा महिला पर अत्याचार की स्थिति पर विचार किया गया है।'' दुख की बात यह है कि अधिकतर बलात्कृत युवती और महिलाओं पर पुलिस रिपोर्ट भी दर्ज नही करती।''[8]

'स्वैच्छिक संगठन एवं उनकी भूमिका' ने विभिन्न चरणों में महिला विकास का तथ्यात्मक ब्यौरा प्रस्तुत किया है। जिसमें समाज विकास की क्षमता मौजूद होती है।

''आज यद्यपि सामाजिक बंधन शिथिल हुए हैं। महानगरों में विबडुगेर जोड़ों की संख्या में वृद्धि हुई है।''[9] तथापि समाज में स्त्री की स्थिति आजादी की समस्याएं चिह्नित की जाती हैं। समाज की व्याख्या में सुधा जैन का वक्तव्य है,'' तलाक, पत्नी, प्रमिका, डेटिंग, वैध्वत्य आदि आज के समाज की विशेषताएं हैं।''[10]

संदर्भः–

1. भूमिका से। स्त्री कथाः – एक अनंता
2. हमें भी दे दो आसमान पृष्ठ – 4 रंजना जैदी
3. आस्थाओं का बाजारीकरण पृष्ठ – 40 रंजना जैदी
4. अजन्मी कन्याओं का मुर्दाघर – 46 रंजना जैदी
5. किराए की कोख – 86 रंजना जैदी
6. ऐशियाई दुल्हनें विदेश में – 92 रंजना जैदी
7. फतवों की रियासत – 96 रंजना जैदी
8. महिला व बाल हिंसा – 104 रंजना जैदी
9. अक्सर अप्रैल 2009 – 110 संपादक हेतु भारद्वाज
10. नारी दिशा और दिशाएं – 10 सुधा जैन